वृत्तपत्राचे नांव :– दिव्य हिमाचल
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– सिमला
वृत्तपत्र पान क :– 2
दिनांक :–27/5/2006

वैदिक राजनीति

चारों वेदों में ज्ञान, कर्म एवं उपासना तीनों का विस्तृत विवरण है। यजुर्वेद मंत्र 40/2 में उपदेश है कि प्राणी शुभ कर्म करता-करता अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की प्राप्ति करे! उन सभी कर्मों का वर्णन भी वेदों में है, जिसे ऋषियों द्वारा जानकर राजा हुएवं प्रजा सबने धर्म युक्त कर्मों द्वारा पृथ्वी पर ही स्वर्ग उतार दिया था। मनु-स्मृति श्लोक 2/6में यही सत्य कहा है कि 'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्' अर्थात समस्त ज्ञान-विज्ञान इत्यादि कर्मों का उदय वेदों से हुआ है। वेदों के गंभीर अध्ययन से यह तथ्य भी प्रकट होता है कि कर्त्तव्य-कर्म त्यागकर केवल अकेली ईश्वर-उपासना ईश्वर को स्वीकार नहीं एवं उसी प्रकार ईश्वर उपासना त्याग कर केवल सांसारिक कर्म करना भी ईश्वर को स्वीकार नहीं। इस विषय में यजुर्वेद में 40/9,14 का स्पष्ट अर्थ है कि जो केवल विज्ञान, परिवार, राजनीति, कृषि अथवा अन्य सांसारिक जड़ वस्तु की उपासना करते हैं, वे अविद्या रूपी घोर अंधकार में फंस कर दुःखी रहते हैं और जो अपने आप को पंडित मानने वाले केवल शब्द-अर्थ और पढ़-सुनकर भाषण इत्यादि करके अभिमानी होकर अवैदिक आचरण करते हैं, वे उससे भी घोर अंधकार में पड़कर दुःखों के सागर में पड़े रहते हैं, इसलिए न केवल जड़ की उपासना और न केवल चेतन की उपासना से कोई धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कर सकता है, अपितु जड़ संसार एवं जड़ शरीर इसका ठीक-ठाक ज्ञान प्राप्त करके तथा जो चेतन जीवात्मा और परमात्मा इनको विद्या द्वारा ठीक-ठीक जानकर शुभ कर्म/उपासना करते हैं, वही इस लोक और परलोक दोनों के सुखों को प्राप्त करते हैं। मंत्रों का भाव यह है कि सांसारिक शुभ कर्म व कर्त्तव्य, ज्ञान-विज्ञान एवं चेतन ब्रह्म की उपासना इन दोनों कर्मों की उन्नति साथ-साथ करनी आवश्यक है। जिस पुरातन एवं सनातन वैदिक संस्कृति द्वारा पिछले तीनों युगों में भारत भूमि 'विश्व गुरु' एवं 'सोने की चिड़िया' कहलाती थी, आज उस संस्कृति को भुलाकर हम दोनों ही पदवियां गंवा बैठे हैं। भारतीय संस्कृति में वेद मंत्रों के द्रष्टा ऋषियों द्वारा रचित छह शास्त्र-वैशेषिक, न्याय, सांख्य, योग, वेदांत और मीमांसा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। जहां जैमिनी ऋषि द्वारा रचित मीमांसा शास्त्र में संपूर्ण चारों वेदों को सुनना मनुष्य मात्र का धर्म कहा है, वहीं कणाद ऋषि द्वारा रचित वैशेषिक शास्त्र में वेदों में कहे उन शुभ कर्मों को जिनके करने से वर्तमान आयु में सुख, संपदा और मृत्यु प्राप्त होने पर भी मोक्ष प्राप्त हो, उसे धर्म कहा गया है। अतः संपूर्ण वेदों एवं शास्त्रों का सारांश यही है कि मनुष्य जन्म में आकर प्राणी आलस्य त्यागकर पुरुषार्थ द्वारा वेदज्ञ विद्वानों की संगत द्वारा शुभ कर्मों का बोध प्राप्त करके उन्हें जीवन में धारण करे, जो कि पिछले तीनों युगों की जनता ने किया था। चाहे वह राजा, नेता, विद्यार्थी, कृषक, वैज्ञानिक अथवा किसी भी क्षेत्र से संबंधित हों। आज के वातावरण में राजनीति की प्रेरणा से युक्त ऋग्वेद मंत्र 79/4,5 में ऐसे राजा/नेता की प्रशंसा के लिए कहा है जो कि शत्रुओं एवं डाकुओं को समूल नष्ट करके प्रजा की रक्षा करे।

स्वामी राम स्वरूप योगाचार्य